ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-1*February- 2018
Innovation The Research Concept

विश्व शान्ति एवं सद्भाव हेतु शिक्षा

सारांश

आज विश्वशान्ति, आन्तरिक सुरक्षा एवं मानव कल्याण के विकास के लिये विश्व की समझ की विशेष आवश्यकता है। दुनिया के लोग विभिन्न युद्धों एवं प्रथम विश्व युद्ध तथा द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामों से पूरी तरह परिचित हो चुके है। विश्व में शान्ति एवं सद्भावना हेतु विद्यालय के पाठयक्रमों, शिक्षण विधियों, अनुशासन के तरीकों, और शिक्षक वर्ग के दृष्टिकोण में सुधार की विशेष आवश्यकता है। क्योंकि विश्वशान्ति और सद्भावना के विकास के लिये शिक्षा के विभिन्न स्तरों के पाठयक्रमों, पाठ्य सहगामी क्रियाओं, विद्यालय के आन्तरिक एवं बाह्य वातावरण , अध्यापन की विधियों, अनुशासन के तौर–तरीकों एवं शिक्षक के व्यवहार में सुधार करके ही इस कार्य को किया जा सकता है।

मुख्य शब्द : भूमण्डलीयकरण, हस्तक्षेप, औपनिवेशक, स्वाध्याय, सम्प्रदाओं, सहिष्णुता, अन्तर्दृष्टि, दुर्व्यवहार, अनुशासनहीनता, आतंकवाद, आत्मवत् सर्वभूतेषुवसुधैव कुटुम्बकम, आलोचनात्मक, अन्तर्राष्ट्रीयता, औद्योगिकीकरण, नगरीयकरण, आध्यात्मिकता, निष्पक्षता, आविष्कार, बुर्जुआ वर्ग ।

मुकेश कुमार गौतम
एसोसिएट प्रोफेसर,
शिक्षा संकाय,
डी0 ई0 आई0,
डीम्ड विश्वविद्यालय,
दयालबाग, आगरा,
उ0 प्र0

प्रस्तावना

विश्वशान्ति, सुरक्षा एवं मानव कल्याण हेतु विश्व की समझ की आवश्यकता है परन्तु इसका आधार आधुनिक भूमण्डलीकरण की अवधारणा न होकर प्राचीन भारतीय विद्वानों द्वारा प्रतिपादित वसुधैव कुटुम्बकम् की धारणा होनी चाहिए। जिसमें मानव कल्याण की भावना को वरीयता दी जाये न कि विश्व पर आधारित आर्थिक एवं सैनिक शक्ति के प्रभुत्व की भावना को। विश्व के अधिकांश राष्ट्र इसी नीति का अनुसरण कर रहें हैं, अपनी पूँजी के विस्तार हेतु सैनिक शक्ति का प्रयोग करते हुए विकासशील एवं अविकसित राष्ट्रों में विभिन्न तरह से हस्तक्षेप भी कर रहें हैं। जिनका मुख्य उद्देश्य विकास करना नहीं है बल्कि पूँजी के विस्तार के लिए बाजार की तालाश करना है।

शान्ति शिक्षा असत् से सत् की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमरता की ओर ले जाने वाली शिक्षा है यह जीवन में सत्, असत् और अमरत्व दिलाने के मार्ग की खोज करती है। शान्ति शिक्षा के सन्दर्भ में हमारे समक्ष तीन प्रश्न उठ खड़े होते हैं यथा –

1 शान्ति शिक्षा क्या है ?
2 शान्ति शिक्षा कैसे दी जाये ?
3 शान्ति शिक्षा किस लिये दी जाये ?

शान्ति का शाब्दिक अर्थ है सुखकारी या कल्याणकारी अर्थात् ऐसी शिक्षा जो स्वयं तथा जगत दोनों के लिए कल्याणकारी हो। यह ऐसी व्यवस्था तैयार कराती है जहाँ वैयक्तिक स्वतन्त्रता एवं सामाजिक न्याय रहेगें। जहाँ अन्याय, प्रजातीय भेदभाव और औपनिवेशक प्रभुत्व का नाम नहीं रहेगा।

शान्ति की शिक्षा शारीरिक, बौद्धिक पक्ष से परे जाकर आन्तरिक क्षेत्र में, आन्तरिक चेतना को जागृत करना है। आन्तरिक चेतना जागृत करने हेतु मानव को अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, आत्म संयम, सन्तोष, तप और स्वाध्याय नियमों का पालन करना होगा। इन नियमों के पालन हेतु शिक्षा में विभिन्न धर्मों, जातियों, मतों, सम्प्रदायों आदि के चित्तकों की विचार धाराओं का समावेश करने की आवश्यकता है।

शान्ति की शिक्षा धार्मिक सहिष्णुता, विश्व बन्धुत्व की भावना, नैतिक मूल्यों के निर्माण, सम्मानजनक जीवन यापन, भय से मुक्ति, आत्म विश्वास, मानवता की रक्षा आदि के लिए भी आवश्यक दिखायी देती है। तभी हम नयी विश्व सभ्यता की नींव डालने में समर्थ हो सकते हैं।

विश्व सद्भाव से अभिप्राय विश्व बन्धुत्व, विश्व मैत्री तथा विश्व नागरिकता पर आधारित भावना से है जिसके अनुसार कोई व्यक्ति अपने को केवल अपने राज्य का ही नहीं बल्कि विश्व का नागरिक समझने लगे और अपने राष्ट्र के संकीर्ण हितों को भुलाकर विश्व के राष्ट्रों तथा उनके निवासियों के कल्याण की आंकाक्षा करने से है।

विश्व सद्भाव के उपर्युक्त अर्थ से स्पष्ट हो जाता है कि यह एक ऐसी भावना है जो राष्ट्र के निवासियों में दूसरे राष्ट्रों के निवासियों के प्रति मैत्री एवं बन्धुत्व उत्पन्न करती है, उन्हें उनके सुख–दुख में साथ देने के लिए प्रेरित करती है, उनमें विश्व के समस्त राष्ट्रों का कल्याण करने की आकांक्षा विकसित करती है, उन्हें समस्त बसुधा को अपना कुटुम्ब समझने के लिए प्रोत्साहित करती है और उनमें केवल अपने राज्य का ही नहीं बल्कि विश्व का नागरिक समझने के लिए अर्न्तदृष्टि उत्पन्न करती है।

सम्पूर्ण विश्व में चारों ओर अशांत वातावरण छाया हुआ है। चाहे वह विद्यालय हो, घर हो, धार्मिक संस्थायें हो, प्रान्त या राज्य हो या फिर राष्ट्र हो, हमें दुर्व्यवहार, अनुशासनहीनता, हिंसा एवं उग्रता दिखायी देती है। एक पुत्र माता–पिता के साथ दुर्व्यवहार करता है। छात्र अपने शिक्षकों के प्रति अनुशासनहीन होते हैं, युवा व्यक्ति आतंकवाद की ओर प्रवृत्त हो रहें हैं। आज के बच्चे नई सभ्यता के निर्माता होगें और उस सभ्यता की गुणवत्ता इस बात पर निर्भर करती है कि उसकी नींव में शान्ति के कितने मूल्य हैं। यदि हमें शान्ति, एकता एवं उन्नति सभी व्यक्तियों के लिए चाहिए तो हमें बच्चों को शान्ति का पाठ सिखाया जाना चाहिए।

अलबर्ट आइन्स्टीन ने भी कहा है कि ''शान्ति को बलपूर्वक नहीं रखा जा सकता। यह केवल समय से ही प्राप्त की जा सकती है। यह बच्चों, स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों एवं शैक्षणिक संस्थाओं की परिधियों के बाहर भी विकसित की जा सकती है। यदि बच्चों को युद्ध के लिए शिक्षित किया जा सकता है तो उन्हें शान्ति के लिए क्यों नहीं शिक्षित किया जा सकता। यदि शैक्षणिक संस्थायें युद्ध की योजनाओं में रूचि ले सकती है तो वे शान्ति की योजनाओं में रूचि क्यों नहीं ले सकती।''

''आत्मवत् सर्वभूतेषुवसुधैव कुटम्बकम्'' एवं गाँन्धी जी द्वारा दिये गये सत्य, अंहिसा एवं विश्व मैत्री के अमर सन्देश इसी विश्व सद्भाव का पाठ पढ़ाते हैं। यूनेस्को के प्रधान निदेशक डा0 वाल्टर एच0 जी0 लेब्स ने विश्व सद्भाव का अर्थ प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि ''विश्व सद्भाव से आशय आलोचनात्मक तथा निष्पक्ष रूप से निरीक्षण करने तथा लोगों की राष्ट्रीयता या संस्कृति पर ध्यान दिये बिना उनके व्यवहार की उत्तमताओं की एक–दूसरे से प्रशंसा करने की योग्यता से है।'' ऐसा करने के लिए मनुष्य को इस योग्य होना चाहिए कि वह समस्त राष्ट्रीयताओं, संस्कृतियों एवं प्रजातियों को इस पृथ्वी पर रहने वाले लोगो की समान रूप से महत्वपूर्ण विभिन्नताओं के रूप में निरीक्षण कर सके।

अध्ययन का उद्देश्य

विश्वशान्ति एवं सद्भाव के लिये लोगों में समझदारी का विकास करना।

1. विश्वशान्ति एवं सद्भाव के सम्बन्ध में सामाजिक कुशलताओं का विकास करना।
2. विश्वशान्ति एवं सद्भावना के सन्दर्भ में लोगों को सामाजिक रुप से सजग बनाना।
3. विश्वशान्ति एवं सद्भाव के विकास के विषय में लोगों को जागरुक बनाना।
4. विश्वशान्ति एवं सद्भाव के सम्बन्ध में लोगों को जानकारी देना।
5. विश्वशान्ति एवं सद्भाव के विषय में शिक्षक वर्ग एवं शिक्षा की भूमिका के सन्दर्भ में जानकारी उपलब्ध कराना।
6. विश्वशान्ति एवं सद्भाव के विकास हेतु सभी राष्ट्रीयताओं, धर्मो, संस्कृतिओं एवं प्रजातियों के व्यक्तिओं को समान समझने के लिये अन्तर्राष्ट्रीय भावना का विकास करना।

विश्वशान्ति एवं सद्भाव के विकास के लिए शिक्षा की आवश्कता–

प्राचीन एवं मध्यकाल में, जब आवागमन एवं संचार के साधनों का इतना विकास नहीं हुआ था, राष्ट्रीयता की भावना हमारे लिए अनिवार्य थी और अन्तर्राष्ट्रीयता (Internationalism) हमारे लिए केवल लक्ष्य मात्र थी। लेकिन वर्तमान समय मं अन्तर्राष्ट्रीयता हमारे लिए अनिवार्य हो गयी है। इसलिये आधुनिक समय को ''अन्तर्राष्ट्रीयता का युग (Age of Internationalism) कहा जाता है।

आधुनिक समय में विश्व के विकास के परिणामस्वरूप आवागमन एवं संचार के साधनों की द्रुतगामी वृद्धि हो गयी है, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न राष्ट्रों के मध्य पायी जाने वाली भौगोलिक दूरी समाप्त हो गयी है, इसके अतिरिक्त जनसंख्या में वृद्धि, औद्योगीकरण तथा नगरीयकरण के परिणामस्वरूप पहले की अपेक्षा हमारा जीवन अधिक जटिल हो गया है और हमारी आवश्यकताओं में तीव्र वृद्धि हो गयी है, जिनकी पूर्ति के लिए विभिन्न राष्ट्रों को एक–दूसरे के सम्पर्क में आना आवश्यक हो गया है। सच तो यह भी है कि आज का मानव राष्ट्र के सीमित दायरे के अन्तर्गत सुख, शान्ति तथा सन्तोष से जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। वर्तमान समय में एक राष्ट्र में घटने वाली घटनायें दूसरे राष्ट्रों को प्रभावित किये बगैर नहीं रह सकती। उदाहरण के लिए युद्ध को ही ले। ''एक युद्ध यूरोप में प्रारम्भ हुआ और बंगाल में तीन लाख व्यक्ति अकाल से मर जाते हैं, लाखों बेघरवार हो जाते है, अपने साधारण कार्यों से पृथक हो जाते हैं और उन सभी सुखों से वंचित हो जाते हैं, जो जीवन को सुखी, रोचक तथा आकर्षक बनाते हैं।''

हमारा यहाँ कहने का अभिप्राय यह है कि वर्तमान समय में आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक आदि सभी दृष्टिकोण से मानव का जीवन विश्व व्यापी हो गया है, ऐसी दशा में वर्तमान समय में लोगों में विश्व सद्भाव का विकास करना

अनिवार्य हो गया है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए शिक्षा की अति आवश्यकता है।

विश्व शान्ति एवं सद्भाव के विकास का एक मात्र साधन शिक्षा

यद्यपि विश्व शान्ति एवं सद्भाव के विकास के लिए रेडियो, दूरदर्शन, चल चित्र, समाचार पत्र एवं पत्रिकायें, भाषा आदि अनेक महत्वपूर्ण साधन हो सकते हैं, लेकिन इन साधनों में शिक्षा का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। इन सभी का प्रमुख कारण यह है कि जिन शिक्षण संस्थाओं द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती है, वे सर्वोत्तम सांस्कृतिक तत्वों का प्रतिनिधित्व करती है एवं सत्य एवं निष्पक्षता की दृष्टि से समाज के साधारण स्तर से उच्च होती है।

इस तथ्य की पुष्टि करते हुए 'यूनेस्को' द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'टुवार्डस् वर्ल्ड अण्डरस्टैंडिग' (Towards World Understanding) में लिखा गया है कि ''विद्यालय आस–पास की संस्कृति में निहित सवोत्तम तत्वों को व्यक्त करते हैं, और साधारणतः करते भी हैं। वे सत्य, ईमानदारी, निष्पक्षता में समाज के सामान्य स्तर से काफी ऊँचे होने चाहिए और साधारणतः होते भी हैं। वे लोगों के मानदण्डों एवं मूल्यों को काफी ऊँचा उठाने का प्रयास करते हैं।'' इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुये विश्व में शान्ति एवं सद्भाव विकसित करने की अति आवश्यकता है।

विश्वशान्ति एवं सद्भाव के विकास के लिये शिक्षा के उद्देश्य

'यूनेस्को' के भूतपूर्व प्रधान निदेशक डॉ0 वाल्टर एच0 सी0 लेब्स ने विश्वशान्ति एवं सद्भाव के विकास के लिए शिक्षा के निम्न उद्देश्यों को निर्धारित किये हैं–

1 छात्रों को समाज के निर्माण कार्य में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए तैयार करना।
2 छात्रों को समाज के समस्त व्यक्तियों के रहन–सहन के ढंगों, मूल्यों और आकांक्षाओं से परिचित कराना।
3 छात्रों को विश्व में एक साथ रहने के लिए आवश्यक बातों का ज्ञान प्रदान करना।
4 छात्रों को सभी स्थानों के लिए व्यक्तियों का एक–दूसरे के प्रति व्यवहार का आलोचनात्मक निरीक्षण के लिए प्रशिक्षण प्रदान करना।
5 छात्रों को अपने स्वयं सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय पक्षपातों को महत्व न देने की शिक्षा प्रदान करना।
6 छात्रां को सभी राष्ट्रीयताओं, सांस्कृतियों एवं प्रजातियों के व्यक्तियों को समान समझने के लिए भावना का सृजन किया जाये।

उपरोक्त उद्देश्यों के अतिरिक्त छात्रों में विश्व शान्ति एवं सद्भाव विकसित करने हेतु शिक्षा के कुछ अन्य उद्देश्य है, जो निम्नलिखित हैं–

1 छात्रों को विश्व नागरिकता के लिए तैयार करना।
2 छात्रों की संकीर्ण एवं अन्धी राष्ट्रीयता को समाप्त किया जाये।
3 छात्रों को उन सभी आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक तत्वों की पूर्ण जानकारी करायी जाये, जिनके कारण विश्व के सभी देश एक–दूसरे पर आधारित हैं।
4 छात्रों को विश्व की उन सभी समस्याओं से परिचित कराया जाये, जो सभी देशों से सामान्य रूप से सम्बन्धित है और उनका समाधान करने के लिए लोकतन्त्रीय पद्धतियों का ज्ञान कराया जाये।
5 छात्रों को सांस्कृतिक विभिन्नताओं में मानव हित के लिए कल्याणकारी समान तत्वों को खोजने के लिए प्रोत्साहित एवं प्रशिक्षण प्रदान करना।
6 छात्रों को सभी राष्ट्रों की उपलब्धियों का आदर तथा मूल्यांकन करना सिखाया जाये, जिससे मानव संस्कृति तथा विश्व नागरिकता का विकास हो।
7 छात्रों को विश्व समाज के निर्माण के लिए मूल्यों का विकास किया जाये।
8 छात्रों में स्वतन्त्र चिन्तन, निर्णय, लेखन तथा भाषण की योग्यता का विकास किया जाये।

विश्व शान्ति एवं सद्भाव के विकास हेतु शैक्षणिक कार्यक्रम (Educational Programme for the development of world Peace and Understanding) में विश्वशान्ति एवं In्भाव के विकास के लिए उपर्युक्त शिक्षा के उद्देश्यों को प्रस्तुत किया गया है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षा के विभिन्न अंगों से सम्बन्धित कार्यक्रमों में परिवर्तन लाने की अति आवश्यकता है इस सम्बन्ध में निम्न सुझाव प्रस्तुत हैं–

पाठ्यक्रम (Curriculum)

छात्रों में विश्व शान्ति एवं सद्भाव को विकसित करने के लिए पाठ्यक्रम में निम्न विषयों को स्थान दिया जाये–

1 विश्व शान्ति एवं सद्भाव नामक विषय को अनिवार्य बनाया जाये।
2 विश्व इतिहास, विश्व कला, विश्व साहित्य, विश्व नागरिक शास्त्र, विश्व–भूगोल तथा विश्व–संस्कृतियों से सम्बन्धित पाठ्य–पुस्तकों को रखा जाये।
3 विभिन्न राष्ट्रों में रहने वाले लोगों के रहन–सहन, समानताओं एवं असमानताओं तथा इनसे सम्बन्धित विषयों को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाये।

पाठ्यसहयोगी क्रियायें (Co-Curricular Activities)

सहगामी क्रियायें (Co-Curruicular Activities) विश्व शान्ति एवं सद्भाव के विकास के लिए निम्न लिखित पाठ्य–सहगामी क्रियाओं को सम्पादित किये जाने की आवश्यकता है–

1. अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खेल–कूद प्रतियोगिताओं का आयोजन।
2. साहित्यिक गोष्ठियों द्वारा विश्व शान्ति एवं सद्भाव की भावना का विकास।
3. विश्व के महान व्यक्तियों एवं विचारकों के व्याख्यानों का आयोजन।
4. छात्रों को अन्य देशों के छात्रों को पत्र–मित्र (Pre-friends) बनाने को प्रोत्साहित करना।
5. छात्रों में विश्व शान्ति एवं सद्भाव की भावना विकसित करने वाली रूचियों को उत्पन्न करना जैसे– विभिन्न राष्ट्रों की डाक टिकटों का एकत्रीकरण।

6. छात्रों में संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O.) के अन्तर्गत आने वाले यूनेस्को, विश्व शान्ति संगठन, अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय आदि के प्रति रूचि जाग्रत करना।
7. एक देश के छात्रों एवं अध्यापकों द्वारा दूसरे देश में जाकर अध्ययन एवं अध्यापन करना।
8. अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षणिक भ्रमण यात्राओं का आयोजन करना।
9. अन्तर्राष्ट्रीय छात्र संघों की स्थापना करना।
10. छात्रों को विभिन्न राष्ट्रों की प्रमुख समस्याओं से अवगत कराना आदि।

विद्यालय(School) –

हम देखते हैं कि आधुनिक समय में हमारे देश के अधिकांश विद्यालय जाति, धर्म, सम्प्रदाय, मत या मिशन, दलबन्दी इत्यादि पर आधारित हैं। अतः इनका वातावरण विश्व शान्ति एवं सद्भाव के लिए उपर्युक्त नहीं है। ऐसी स्थिति में विद्यालयों के स्वरूप में परिवर्तन करने की अति आवश्यकता है। इसके लिए आवश्यकता इस बात की भी है कि विद्यालयों में इस प्रकार का वातावरण विकसित किया जाये, जो छात्रों में विश्व शान्ति एवं सद्भाव के विकास में सहायक हो सके।

शिक्षण विधि (Method of Teaching)

छात्रों में विश्वशान्ति एवं सद्भाव के विकास के लिए विद्यालयों में प्रचलित शिक्षण–पद्धति में भी बदलाव लाने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए विज्ञान के शिक्षण में इस बात पर जोर दिया जाये, कि अभी तक जो वैज्ञानिक आविष्कार हुए हैं, उनके द्वारा मानव जीवन को किस प्रकार सुखी एवं सम्पन्न बनया जाये। ठीक इसी प्रकार साहित्य के शिक्षण में इस बात पर जोर दिया जाये कि किस प्रकार साहित्य के द्वारा विश्व के सभी लोगों का कल्याण हो सकता है। इस प्रकार अन्य विषयों के शिक्षण में उनके सामाजिक पक्ष पर बल देकर छात्रों में विश्व शान्ति एवं सद्भाव का विकास किया जा सकता है।

अनुशासन (Discipline) –

छात्रों में विश्व शान्ति एवं सद्भाव के विकास के लिए उनमें स्वस्थ अनुशासन सम्बन्धी आदतों एवं गुणों का विकास करना भी अति आवश्यक है। वे ऐसी भावनाओं से ओत–प्रोत हों, जो उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से चिन्तन करने के लिए बाध्य करे। उनमें संकुचित राष्ट्रीयता की भावना का विकास न होने पाये, क्योंकि इससे वे राष्ट्र के संकुचित स्वार्थों के वशीभूत होकर ऐसा कार्य कर सकते हैं जो विश्व शान्ति एवं सद्भाव के लिए बाधा न पहुँचाए।

शिक्षक (Teacher)

छात्रों में विश्वशान्ति एवं सद्भाव के विकास के लिए जो भी शैक्षणिक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं, उन सभी की सफलता शिक्षक पर निर्भर करती है। इसके लिए सबसे पहले यह आवश्यक है कि–

1. शिक्षक स्वयं विश्वशान्ति एवं सद्भाव से ओत–प्रोत हो।
2. शिक्षक उन सभी गुणें से परिपूर्ण हो जो उसे विश्वशान्ति एवं सद्भाव के विकास के लिए सफलता पूर्वक शिक्षा प्रदान करने में सहायक हो।
3. शिक्षक को विश्व के इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीतिक शास्त्र,विश्व के धर्मों, विश्व की संस्कृतियों और विचारधाराओं का पूर्ण ज्ञान हो।
4. शिक्षक विश्व दृष्टिकोण रखते हुए छात्रों को शिक्षा प्रदान करे।
5. शिक्षक जिन अन्तर्राष्ट्रीय तथ्यों को छात्रों के समक्ष रखे, उनके प्रति उसकी स्वयं की आस्था हो।
6. शिक्षक अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण को इस प्रकार अपनाये कि उसका व्यक्तित्व एवं आचरण एक आदर्श हो।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि आज विश्व में जहाँ भी युद्ध हुए हैं, युद्ध चल रहें हैं, अशान्ति का वातावरण है, असुरक्षा की भावना है यह सभी बुजुआ वर्ग की देन है। बुजुआ वर्ग ने अपनी पूँजी के विस्तार के लिए इस प्रकार के वातावरण को पैदा किया है जिससे उनकी पूँजी का विस्तार एवं साम्राज्य कायम रहे।

वैदिक काल से लेकर आज तक बुजुआ वर्ग ने चाहे वैज्ञानिक अनुसन्धान हुए, उत्पादन के साधनों का विकास किया गया हो फिर सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था ही क्यों न हो अपने हाथों में ले रखी है जिसका मन माना प्रयोग करते हैं और अधिक से अधिक पूँजी अर्जित करने का प्रयास करते हैं। आज चाहे विश्व शान्ति एवं सद्भाव की समस्या हो, पर्यावरण के संरक्षण की समस्या हो, या फिर शिक्षा की गुणवत्ता की समस्या हो आदि बुजुआ वर्ग के कारण ही है।

मेरा यहाँ कहने का आशय यह है कि विश्व में वैज्ञानिक अनुसन्धान किये जाये, उत्पादनों के साधनों का विकास किया जाये, विभिन्न शिक्षण संस्थायें भी खोली जाये इत्यादि कार्य व्यक्तिगत हित या अधिक पूँजी को कमाने के लिए नहीं बल्कि समाज हित के लिए विकसित किये जाये तभी विश्व में शान्ति एवं सद्भाव का वातावरण विकसित किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *भट्टाचार्य, श्रीनिवास (1996) – फाउण्डेशन ऑफ एजूकेशन, अटलॉटिंक पब्लिर्स एवं डिस्ट्रीव्यूटर्स, न्यू दिल्ली, पृ. 95–100*
2. *फाड़ियाँ, बी0 एल0 (2009) – अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, साहित्य प्रकाशन, आगरा*
3. *गाँधी, इन्दिरा (1981) – पीस स्टडीज फॉर स्कूलस, नेशनल हेराल्ड, सितम्बर 20, 1981*
4. *मित्तल, एम0 एल0 (2015) – नागरिक शास्त्र शिक्षण, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ0 सं0 60–65*
5. *पाउलो फेरे (1972) – पेडागोगी ऑफ ओपिसिओ, पिनग्यून बुक, लन्दन।*
6. *पोप पॉल छठवें (1979) – टू रीच पीस एण्ड टू टीच स्पीस वर्ल्ड, गुडविल कॉमेन्टरी लन्दन सं0 13 अगस्त 1979, पृ. 6*
7. *सक्सेना, सरोज (2012) – नागरिक शास्त्र शिक्षण, साहित्य प्रकाशन, आगरा, पृ0 सं0 125–132*

8. *सिंघल, एस0 सी0 (2010) – भारत की विदेश नीति, लक्ष्मी नारायण प्रकाशन, संजय प्लेस, आगरा।*
9. *शर्मा, योगेन्द्र कुमार एवं शर्मा,मधुलिका (2008) – शिक्षा के समाज शास्त्रीय आधार, कनिष्क पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।*
10. *यूनेस्को (1972) – लर्निंग टू द वर्ल्ड ऑफ एजूकेशन टू डे एण्ड टूमोरो, पेरिस, पृ. 147*